P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-6* ISSUE-8* (Part-2) April- 2019
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

उपनिषदों का तात्विक विवेचन और ओशो की विचार दृष्टि

भानुप्रकाश शर्मा
सहायक आचार्य,
हिन्दी विभाग,
राजकीय महाविद्यालय,
उनियारा, टोंक (राज.)
भारत

सारांश

भारतीय साहित्य में उपनिषदों की कोई सानी नहीं है क्योंकि उपनिषद भक्त और परमात्मा के मध्य किसी भी कर्मकांड को स्वीकार नहीं करते। उनका केंद्रीय विचार सत्य को जानने के मार्ग में आडंबरो को अस्वीकार करना है। ज्ञात का संबंध विज्ञान से है, तो अज्ञात का संबंध दर्शन से, और अज्ञेय का संबंध धर्म से है। उपनिषद अज्ञात से बात शुरू करते हैं, और अज्ञेय तक पहुंचा देते हैं। अर्थात वे धर्म तक पहुंचाने के मार्ग हैं। परंतु उपनिषदों के साथ समस्या यह रही कि उनके अर्थ और अभिप्राय को आसानी से समझा नहीं गया। उपनिषदों की सबसे सटीक व्याख्या आचार्य शंकर ने भाष्य के रूप में की है। परंतु उस भाष्य को समझना सामान्य मनुष्य तो क्या, बुद्धिजीवियों के लिए भी मुश्किल है। इस समस्या के हल के रूप में आचार्य ओशो हमारे सामने आते हैं। आचार्य ओशो ने योग, भक्ति, सूफी, झेन, तंत्र, कबीर मीरा दादू, बुद्ध, महावीर, लाओत्से, वेद, उपनिषद, पुराण, कुरान, बाईबिल और न जाने कितने विषयों पर अपने अनमोल विचार सामने रखे हैं। जितने भी उपनिषद प्राप्त होते हैं, ओशो ने उनकी अद्भुत व्याख्या की है। उन्होंने उपनिषदों की तात्विक विवेचना करते हुए उनके रहस्य को पूरी तरह उद्घाटित कर दिया है। प्रस्तुत लेख का उद्देश्य यही है कि एक ओर तो हम उपनिषदों की विषय भूमि से परिचित हो सकें, और दूसरी ओर उन उपनिषदों में अध्यात्म का जो रहस्य छुपा हुआ है, हम उसे भी जान सके। ओशो ने अपनी अंतर्दृष्टि से उपनिषदों के रहस्य के सभी द्वार खोल दिए हैं। उपनिषदों के सूत्रों की ओशो ऐसी व्याख्या करते हैं की उस आध्यात्मिक रहस्य को जानकर हम उपनिषदों के ऋषियों के चरणों में नतमस्तक हो जाने को मजबूर हो जाते हैं। उपनिषदों की तात्विक विवेचना और ओशो के विचारों की गहराई को जानने की दृष्टि से यह लेख अत्यंत महत्वपूर्ण है।

मुख्य शब्द : उपनिषद, तात्विक विवेचन, ओशो, विचार दृष्टि।

प्रस्तावना

अध्यात्म की विषय भूमि में भारतीय भूभाग की कोई सानी नहीं है। जब धर्म और उसके विवेचन की बात आती है, तो दुनिया का कोई भी देश और उसका साहित्य ऐसा नहीं है, जो भारतीय दर्शन, धर्म दर्शन के आसपास भी ठहरता हो। भारत की महान आध्यात्मिक परंपरा में उपनिषद अनमोल रत्न की तरह है। पिछले हजारों वर्षों में भारतीय उपनिषदों की तात्विक विवेचना की जाती रही है, परन्तु सरल और आसान से दिखने वाले उपनिषद बड़े–बड़े मनीषियों के लिए भी गूढ़ रहस्यतम ही रहे हैं। भारत की आध्यात्मिक धरोहर के लिए आचार्य ओशो एक वरदान के रूप में सामने आते हैं। वेद, उपनिषद, सूफी, झेन, ध्यान, योग, तंत्र न जाने कितने विषय हैं, जिन पर ओशो ने गहन विचार विश्लेषण प्रस्तुत किया है। यह भारत ही नहीं वरन् विश्व के संपूर्ण मनुष्यों के लिए सौभाग्य है कि ओशो ने आध्यात्मिक के रहस्यों के द्वारों को अद्भुत ढंग से खोल दिया है। प्रस्तुत लेख में अध्ययन का उद्देश्य यह है कि उपनिषदों पर आचार्य ओशो ने जो अपनी विचार दृष्टि प्रस्तुत की है, उसकी समीक्षा करने का प्रयास हम करेगें। वेदों और उपनिषदों की टीका के नाम पर न जाने कितने व्यर्थ के ग्रंथ सामने आए हैं। प्रस्तुत लेख का मूल उद्देश्य यही है कि उपनिषदों की वास्तविक मर्म को हम सामान्य मनुष्य तक पहुंचा सके। उपनिषद क्या है? उसमें विषय क्या है? तथा उसका वास्तविक अर्थ क्या हो सकता है? तथा ओशो ने उपनिषदों के रहस्य को किस तरह अनावृत किया है? इन सब तथ्यों का विश्लेषण करना ही प्रस्तुत लेख का मूल मंतव्य है।

भारत के आध्यात्मिक सागर में उपनिषद अनमोल मोती हैं। भारत के प्राचीनतम इतिहास में अपौरुषेय माने जाने वाले वेदों की रचना हुई। और वेदों में अध्यात्म के विविध रूपों का सुनहरा वर्णन हुआ। परंतु समय बीतने के साथ वेद अंधविश्वासों और कर्म कांडों में जकड़े जाने लगे। उनका विश्लेषण करने वाला पुरोहित वर्ग अपने स्वार्थ और लालच के लिए महान वेदों की ऐसी व्याख्या करने लगा, जिससे उसका वास्तविक मर्म तो विलुप्त हो गया, और वेदों कि ऐसी व्याख्या की जाने लगी जिसमें केवल पाखंड, आडंबर और कर्मकांड की ही दृष्टि थी। ऐसे समय में भारतीय आध्यात्मिक साहित्य में उपनिषदों का आविर्भाव हुआ। ऐसा माना जाता है कि ईसा से 400 से 800 वर्ष पूर्व यह प्रणीत हुए, तथा इनमें ब्रह्म ज्ञान संबंधी आत्म साक्ष्य हैं।

"उपनिषद ही भारतीय दर्शनों के मूल स्रोत हैं चाहे वह वेदांत हो या सांख्य या जैन धर्म या बौद्ध धर्म उपनिषदों को स्वयं ही वेदांत भी कहा गया "[1]

उपनिषदों की बहुत सी संख्या मानी गई है परंतु अब कुछ ही प्राप्त हुए हैं। सर्वसार उपनिषद, कैवल्य उपनिषद, अध्यात्म उपनिषद, कठोपनिषद, ईशावास्योपनिषद, निर्वाण उपनिषद, आत्म पूजा उपनिषद, केनोपनिषद जैसे कुछ उपनिषद ही अब उपलब्ध हैं। उपनिषद भारतीय सभ्यता की विश्व को अमूल्य धरोहर है।

उपनिषदों का रहस्योद्घाटन : ओशो की दृष्टि

जब हम उपनिषदों का अभिप्राय समझने की तरह बढ़ते हैं, तो एक बात स्पष्ट हो जाती है कि भारतीय साहित्य में उपनिषदों का ज्यादातर भाष्य या अनुवाद ही किया गया है। उसके अभिप्राय को समझाने की चेष्टा या तो की ही नहीं गई अथवा विभिन्न आचार्य उसमें ज्यादा सफल नहीं रहे। उपनिषदों की सबसे सार्थक विवेचना आचार्य शंकर ने की है, परंतु शंकर का भाष्य साधारण मनुष्य तो क्या मनीषियों के ही समझने में आसान नहीं है। उपनिषदों के रहस्य इतने गूढ़ और दुसाध्य हैं कि स्वयं शंकर जब उपनिषदों पर भाष्य लिखने बैठे तो उन्होंने पहले पद–भाष्य की रचना की थी, परंतु उससे तात्पर्य का जब पर्याप्त विवेचन नहीं हुआ, तो उन्हें वाक्य भाष्य भी लिखने की आवश्यकता हुई श्री आनंद गिरी स्वामी कहते हैं –

"अर्थात केनेषितम इत्यादि सामवेदीय शाखा – अंतर्गत ब्राह्मणोंपनिषद की पदशः व्याख्या करके भी भगवान भाष्यकार संतुष्ट नहीं हुए क्योंकि उसमें उसके अर्थ का शारीरिक शास्त्रानुकूल युक्तियों से निर्णय नहीं किया गया था, अतः अब श्रुत्यर्थ का निरूपण करने वाले न्याय प्रधान वाक्यों से व्याख्या करने की इच्छा से आरंभ करते हैं।"[2]

आधुनिक युग के रहस्य–दर्शी ऋषि ओशो भारतीय आध्यात्मिक साहित्य के लिए सौभाग्य के रूप में सामने आते हैं। उन्होंने प्राचीन हिंदू धर्म के लगभग सभी गूढ़ रहस्यों का उद्घाटन करने का श्रेष्ठतम प्रयास किया है। आचार्य ओशो ने लगभग सभी प्राप्त उपनिषदों पर सार्थक विवेचना प्रस्तुत की है। उन्होंने शंकर के गूढ़तम भाष्य को भी आमजन के लिए सहज और सरल बना दिया है। मनीषियों के लिए भी दुर्लभ ग्रंथ इतने सरल और सहज कैसे हो गए इस बाबत ओशो कहते हैं––

"यदि तुम साक्षी हो जाते हो, तो अहंकार विलीन हो जाता है। जब अहंकार विलीन हो जाता है, तब तुम वाहन बन जाते हो, तुम एक मार्ग बन जाते हो। तुम एक बांस की पोंगरी बन जाते हो और बांसुरी पतंजलि के अधरों पर रखी जा सकती है, बांसुरी कृष्ण के अधरों पर रखी जा सकती है, वह बांसुरी वही रहती है लेकिन जब यह बुद्ध के होठों पर होती है तब बुद्ध प्रवाहित हो रहे होते हैं।"[3]

उपनिषदों से संबंधित अधिकांश विवेचना के साथ कठिनाई यह है कि वे उन विद्वानों के द्वारा लिखित होते हैं, जिन्होंने उनका आत्म साक्ष्य नहीं किया है। उन्होंने केवल भाषा और व्याकरण पर ज्यादा ध्यान दिया है। परंतु ओशो उपनिषदों के वास्तविक भाव व अभिप्राय तक पहुंचाने में सक्षम हुए हैं।

उपनिषदों की परंपरा और उनका अभिप्राय

ओशो उपनिषदों का अभिप्राय समझाते हुए सबसे पहले यह स्पष्ट करते हैं कि अज्ञात ही उपनिषदों का संदेश है। जो सबसे महत्वपूर्ण है,वह सदैव ही अज्ञात है। जिसको हम जानते हैं, वह बहुत ही ऊपरी है। तीन शब्द जानने हमारे लिए बहुत जरूरी है, पहला ज्ञात दूसरा अज्ञात और तीसरा अज्ञेय। ज्ञात वह है जिसे जाना जा सकता है। यह विज्ञान से संबंधित है। अज्ञात वह है जिसे जानने का प्रयास किया जाता है, वह दर्शनशास्त्र से सम्बंधित है। परंतु अज्ञेय वह है, जिसे कभी जाना नहीं जा सकता परंतु जिसका अनुभव किया जा सकता है, जिया जा सकता है यह धर्म है। –

"उपनिषद अज्ञात से प्रारंभ करते हैं और वह अज्ञेय पर समाप्त करते हैं। उपनिषदों की शुरुआत दर्शनशास्त्र से होती है, परंतु वह मात्र एक शुरुआत ही है। वे धर्म में समाप्त होते हैं। अज्ञेय में समाप्त होते हैं।"[4]

ओशो मानते हैं कि इन उपनिषदों का आविर्भाव भारत के एक संक्रमण युग में हुआ था। वेदों के चारों ओर जो विधान का भंडार खड़ा कर दिया गया था। उसके विरुद्ध यह महान विद्रोह के स्वर थे। उस समय वेद जीवंत नहीं रह गए थे। अतः मानवीय चेतना की वास्तविक देवीय प्रकृति की पुनः प्रतीति के लिए मृत विधानों के विरुद्ध उपनिषद महान क्रांतिकारी उद्घोष थे। उस समय धर्म गहन नहीं रह गया था। आत्मबोध एवं प्रतीति से उसका संबंध नहीं रह गया था। केवल कुछ विधानों की पालनपुर्ति भर रह गई थी। जब धर्म मृत हो जाता है, तब वह मात्र विधान भर रह जाता है। उपनिषद पाखंड को पूर्णतया अस्वीकार करते हैं। आत्म–पूजा उपनिषद पर बोलते हुए ओशो स्पष्ट करते हैं कि यह सारा उपनिषद इसी एक बात से संबंधित है कि कैसे आपकी जिंदगी को ही एक पूजा बना दे। किसी तीर्थ में या किसी मंदिर में जाकर व्यक्ति को पूजा करने की आवश्यकता नहीं है। यह उपनिषद पूर्ण रूप से सक्रिय कर्म–कांड के विरोध में हैं। किसी क्रिया की आवश्यकता नहीं, केवल एक अलग रूप में कुछ भी करने में कुछ भी ना करने में उसका सतत् स्मरण बना रहे, इसके अतिरिक्त और किसी भी कर्मकांड की आवश्यकता नहीं है।

अगर हम उपनिषदों के विषय को देखें तो वह पाखंड और कर्मकांड को रत्ती भर भी स्वीकार नहीं करते दुनिया में आसन, प्राणायाम और योग साधने की बात की जाती है, परंतु उपनिषद कहते हैं निश्चल ज्ञान ही आसन है।–

निश्चलम् ज्ञानम् आसनं" (आत्म पूजा उपनिषद) हिंदुओं के पूजा के विधान में जब भगवान को जल अर्पित किया जाता है, तो उसे बड़ा पवित्र माना जाता है। परंतु उपनिषद इसे भी एक कर्मकांड मानते हैं। वे कहते हैं– "उन्मनी भावः पाध्यम"

अर्थात मन का ऊपर की ओर बहना ही माध्यम है,जल है। परमात्मा की पूजा के लिए मन जब भगवान की ओर बहना शुरू होता है, वही भगवान को जल अर्पित करना है। किसी पात्र में पानी भर कर भगवान को अर्घ्य देना जल चढ़ाना नहीं है। उपनिषदों का विषय यद्धपि बहुत सरल और सहज है। परंतु जब सारी दुनिया कर्मकांड को प्रोत्साहित करती है। पुरोहित वर्ग कर्मकांड को आगे बढ़ाता है, तो उपनिषद ऐसे कर्मकांड को पूरी तरह खारिज कर देते हैं। भगवान की पूजा अर्चना में अग्नि जलाई जाती है, उसमें धूप को जलाया जाता है, भगवान के नैवेद्य यानी प्रसाद चढ़ाया जाता है, परंतु उपनिषद ऐसे सभी कार्यों को कर्मकांड मानते हैं। जब अग्नि में धूप को जलाना हो तो उस कर्मकांड के विरुद्ध उपनिषद कहते हैं– "चिदग्नि स्वरूपम् धूपः" (आत्म–पूजा उपनिषद)

अर्थात स्वयं के भीतर चेतन्य की अग्नि को जलाना ही धूप है।बाहर किसी अग्नि को जलाकर उस में धूप डालकर जलाना यह कोई परमात्मा की पूजा नहीं है, वरन जब व्यक्ति भीतर चौतन्य से भर जाता है, और परमात्मा के प्रति सजग हो जाता है, तो वही अग्नि को जलाना है। परमात्मा की पूजा में उपनिषद तो दीपक जलाने तक को स्वीकार नहीं करते। सामान्यतः भगवान के मंदिर में मनुष्य दीपक जलाकर परमात्मा की आराधना करते हैं। परंतु ओशो स्पष्ट करते हैं की उपनिषदों को किंचित मात्र भी कर्मकांड स्वीकार नहीं है

"चिदादित्य स्वरूपम् दीपः" (आत्म–पूजा उपनिषद)

अर्थात चौतन्य के सूर्य में स्थित होना ही एकमात्र दीपक है। ओशो समझाते हैं कि साधारण मिट्टी के दीपक को परमात्मा के मंदिर में जला देना कोई भक्ति नहीं है, वरन् जब व्यक्ति सजगता के द्वारा स्वयं चौतन्य से भर जाता है, तो चेतना का वह जागरण ही परमात्मा के सामने दीपक का जलना है। यह किसी सामान्य दीपक और बाती को जलाना दीपक जलाना नहीं है। इसमें मनुष्य को स्वयं को दांव पर लगाना होता है उपनिषद केवल मनुष्य की सजगता को ही स्वीकार करते हैं। कोई भी कर्मकांड परमात्मा के मिलन में सहायक नहीं हैं। जब मनुष्य स्वयं को सजग बनाता है, तो चेतना की यह सजगता ही दीपक का जलना है। वस्तुतः उपनिषद पाखंड और कर्मकांडों के विरुद्ध एक तीखी और गहरी प्रतिक्रिया है।

उपनिषदः अज्ञात से अज्ञेय की ओर

ओशो ने उपनिषदों के मर्म को आकाश से उठाकर धरती पर रख दिया है। साधारणतः उपनिषद अज्ञात की व्याख्या से शुरू करते हैं। और अज्ञेय तक पहुंच जाते हैं। ज्ञान और भक्ति सत्य तक पहुंचने के दो द्वार हैं। सामान्यतः दोनों ही मार्गों पर भिन्न–भिन्न व्यक्ति चलते हैं। परंतु उपनिषद दोनों मार्गों को एक साथ स्वीकार कर लेते हैं आत्म पूजा उपनिषद की व्याख्या करते हुए ओशो स्पष्ट करते हैं।———:

"यह उपनिषद ऐसे व्यक्ति का है जो कि दोनों हैं, तुमने कदाचित ध्यान नहीं दिया, इस उपनिषद का नाम ही है आत्म–पूजा,यह शीर्षक ही विरोधाभासी है, पूजा तो सदैव किसी और की होती है, लेकिन यहां तुम ही पूजा करने वाले हो और तुम ही परमात्मा भी हो। हर एक वाक्य भक्त और ज्ञानी दोनों के लिए है। लगातार सारा उपनिषद यही कर रहा है, प्रतीक भक्तों के हैं, पूजा के, किंतु जो अर्थ दिए हैं वे ज्ञानियों के हैं।"[5]

ओशो ने सभी प्राप्त उपनिषदों की व्याख्या ही नहीं की वरन् उन्होंने उपनिषदों से जुड़े हुए रूपकों की भी बहुत सुंदर तरीके से समझाया है। उपनिषदों के सबसे प्रसिद्ध रूपक में से एक है, जिसमें दो पक्षी साथ रहने वाले हैं, और दोनों मित्र हैं। वह एक ही वृक्ष को आलिंगन किए हुए हैं। उनमें से एक स्वाद वाले फल को खाता है और दूसरा फल खाता हुआ केवल साक्षी रूप से रहता है। उस वृक्ष पर जब एक पक्षी (जीव) आसक्त होकर असमर्थता से धोखा खाता हुआ शोक करता है, किंतु जब अपने दूसरे साथी (ईश) और उनकी महिमा को देखता है, तब शोक के पार हो जाता है। इस रहस्य पूर्ण रूपक के मर्म को समझाते हुए ओशो स्पष्ट करते हैं– "अज्ञानी भी पाता है कि एक ही पक्षी है– कर्ता, दूसरा उसे दिखाई नहीं पड़ता। ज्ञानी भी पाता है कि एक ही पक्षी है, साक्षी, दूसरा उसे दिखाई नहीं पड़ता। यह उपनिषद में दो पक्षी कहे हैं, अज्ञानी और ज्ञानी दोनों की समझ को एक साथ समाहित करने के लिए। दो पक्षी वहां है नहीं,अज्ञानी के लिए भी एक है, वह कर्ता है, ज्ञानी के लिए भी एक है,वह साक्षी है। एक घड़ी आएगी जब तुम्हें खुद ही दिखाई पड़ जाएगा कि पक्षी एक है,और जिस दिन एक ही पक्षी रह जाता है, उस दिन अद्वैत का अनुभव हुआ,उस एक का नाम ही अद्वेत। "[6]

इस प्रकार ओशो गुह्य और गंभीर रूपक के मर्म को पूरी तरह से स्पष्ट कर देते हैं। उपनिषदों की विवेचना करते समय ओशो ऐसे रहस्य से भी पर्दा उठाते हैं जिस रहस्य को जानने की कोशिश भारतीय मनीषी हजारों साल से करते रहे हैं। भारत के बहुत से धार्मिक साहित्य ऐसे हैं, जो जिस मंत्र से प्रारंभ होते हैं, उनका अंत भी उसी मंत्र से होता है। कुछ उपनिषदों में भी इसी सिद्धांत को अपनाया गया है। अत्यंत चर्चित और प्रसिद्ध ईशावास्योपनिषद भी इस सिद्धांत का अनुगमन करता है। इस उपनिषद का प्रथम श्लोक ओम् पूर्णमदः पूर्णमीदम पूर्णात पूर्णमूदच्यते....हैं और रहस्य की बात यह है कि इस उपनिषद का अंतिम श्लोक भी यही है ओशो इस सिद्धांत के रहस्य को बड़ी सुंदरता और सरलता से समझाते हैं। – "जीवन का शाश्वत नियम है, जहां से होता है प्रारंभ, वही होती है परिणति। जो है आदि, वही है अंत। जीवन के इसी शाश्वत नियम के अंतर्गत ईशावास्य जिस सूत्र से शुरू होता है, उसी सूत्र पर पूर्ण होता है। इसके अतिरिक्त और कोई उपाय नहीं है। सभी यात्राएं

वर्तुल में है।... the first step is the last also .... पहला कदम आखिरी कदम भी है। जो ऐसा समझ लेते हैं कि पहला कदम आखरी कदम भी है, वह व्यर्थ की दौड़ धूप से बच जाते हैं "[7]

निष्कर्ष

भारतीय अध्यात्म के इतिहास में वेद और पुराणों के इर्द–गिर्द जो पाखंड और कर्मकांड खड़ा हो गया था, उस वातावरण को परिशुद्ध करने के लिए उपनिषदों का जन्म हुआ। उपनिषदों ने इस केंद्रीय विचार को प्रकट किया कि परमात्मा और भक्तों के मध्य किसी भी कर्मकांड की आवश्यकता नहीं हैं। प्रसाद चढ़ाना, जल चढ़ाना, दीपक जलाना जैसे कृत्यों के विपरीत उपनिषदों ने स्पष्ट किया कि मनुष्य को स्वयं को दांव पर लगाना होता है। ओशो कहते हैं।

"तुम्हारा जीवन तो तभी समृद्ध होगा, जब तुम्हारा वेद तुम्हारे भीतर पैदा हो जाए, वह उधार ना हो। उस वेद को ही हम असली वेद कहते हैं, जो तुम्हारे ध्यान में जन्मेगा। निश्चित ही जिस दिन तुम्हारा वेद जन्म जाएगा, उस दिन पुराने वेद को भी तुम अगर पढ़ोगे तो समझोगे कि ठीक है। तुम गवाही हो जाओगे"[8]

उपनिषदों के आविर्भाव ने वेदों के कर्मकांडों को तो समाप्त करने का प्रयास किया, परंतु स्वयं उपनिषदों को समझना साधारण व्यक्ति के लिए मुश्किल था। आचार्य शंकर का भाष्य भी कठिनतम ही रहा। इस अर्थ में ओशो का साहित्य बहुत महत्वपूर्ण हो जाता हैं। ओशो ने उपनिषदों की ऐसी व्याख्या की है, कि उनकी तात्विक विवेचना ने बड़ी सरलता और सहजता से उपनिषदों को सभी के लिए सुलभ बना दिया है। ओशो की विवेचना के पश्चात, जो उपनिषद साहित्य अज्ञात की विवेचना करता हुआ स्वयं ही अज्ञात में जा रहा था, ओशो ने उस उपनिषद साहित्य को सभी के लिए पुनर्जीवित कर दिया है और यह घटना मनुष्यता के लिए सदैव सौभाग्य रहेगी।

अंत टिप्पणी

1. *उपनिषद विकीपीडिया, गूगल सर्च*
2. *पुस्तक– केनोपनिषद, लेखक आचार्य शंकर, पृष्ठ 3, प्रकाशक गीता प्रेस गोरखपुर 273005*
3. *पुस्तक– पतंजलि योग सूत्र, पृष्ठ 206, लेखक ओशो, प्रकाशक फ्यूजन बुक्स पुणे महाराष्ट्र*
4. *पुस्तक– आत्म पूजा उपनिषद, प्रथम भाग, पृष्ठ 15, लेखक ओशो, प्रकाशक डायमंड पॉकेट बुक्स, नई दिल्ली 110020*
5. *पुस्तक– आत्म पूजा उपनिषद, भाग 2, पृष्ठ 242, लेखक ओशो, प्रकाशक डायमंड पॉकेट बुक्स नई दिल्ली– 110020*
6. *पुस्तक– भारत एक अनूठी संपदा, पृष्ठ दृ 45,लेखक ओशो, प्रकाशक डायमंड पॉकेट बुक्स, नई दिल्ली 110020*
7. *पुस्तक– ईशावास्योपनिषद, पृष्ठ 219, लेखक ओशो, प्रकाशक हिंद पॉकेट बुक्स, नई दिल्ली 110003*
8. *पुस्तक– भगति भजन हरि नाम, पृष्ठ 59, लेखक ओशो, प्रकाशक डायमंड पॉकेट बुक्स लिमिटेड, नई दिल्ली, 110020*